International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

हरियाणा का लोकसंगीतः एक शोधात्मक अध्ययन

डॉ॰ पूर्णचन्द शर्मा
प्रोफेसर (सेवानिवृत) हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
म॰ नं॰ 756/35, जनता कालोनी, रोहतक
डॉ॰ अशोक कुमार शर्मा
असिसटेंट प्रोफेसर, संगीत एवं नृत्य विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

मनुष्य के लिए तन की पुष्टि एवं मन की तुष्टि दोनों ही अनिवार्य है। मन, तन पर शासन करता है, अतः इसका उत्फुल्ल एवं स्वस्थ रहना और भी आवश्यक है। शरीर की मज़बूती के लिए जितना महत्त्व पौष्टिक आहार का है, उतना ही महत्त्व मन की प्रसन्नता के लिए मनोरंजन का भी है। वस्तुतः मनुष्य की मनोरंजनात्मक वृत्ति ही उसे पशु से अलगाती है।

मनुष्य की इस सहज एवं स्वाभाविक प्रवृत्ति को रेखांकित करते हुए रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है कि "जब मनुष्य के पेट में भूख खांव-खांव कर रही थी, तब भी उसकी आँखें गुलाब पर टंगी थीं, टंकी थी। उसका प्रथम संगीत निकला जब उसकी कामिनियाँ गेहूँ को ऊखल और चक्की में कूट-पीस रही थीं। पशुओं को मारकर खाकर ही वह तृप्त नहीं हुआ, उसकी खाल का बनाया ढोल और उसके सींग की बनाई तुरही। मछली मारने के लिए जब वह अपनी नाव में पतवार का पंख लगाकर उसे जल पर उड़ाए जा रहा था, तब उसके छप-छप में उसने ताल पाई, तराने छेड़े, बांस से उसने लाठी ही नहीं बाँसुरी भी बनाई।"[i] इस कथन से सिद्ध होता है कि संगीत अनादिकाल से ही मानव-जीवन का अभिन्नांग रहा है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

संगीत के विविध आयामों पर दृष्टिपात करने से पहले इसके स्वरूप को जान लेना नितान्त आवश्यक है। संगीत रत्नाकर में कहा गया है- गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते[ii] अर्थात् गीत, वाद्य तथा नृत्य के मंजुल मेल को संगीत कहते हैं।

डॉ॰ शरच्चन्द्र परांजपे ने भी प्रकारान्तर से संगीत की यही परिभाषा दी है। उनका कहना है कि 'संगीत एक त्रिवेणी है, जिसमें गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों सरिताओं का मधुर संगम है।'[iii]

संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों के अनुसार जो सम्यक् प्रकार से अर्थात् स्वर, ताल, शुद्धाचरण एवं शुद्ध भावमुद्राओं सहित गाया जाए वही संगीत है। शास्त्र की उक्ति है- 'सम्यक् प्रकारेण यद् गीयते तत्संगीतम् ।'

संगीताचार्य राम अवतार वीर की मान्यता है कि संगीत विभिन्न ध्वनियों को मिलाने वाली वह कला है, जिसके द्वारा मनोभावों के प्रदर्शन में रोचकता, माधुर्य एवं सुन्दरता आती है। संगीत की परिभाषा केवल मानवीय गायन तक ही सीमित नहीं वरन् इसके अन्तर्गत पशुओं की विविध बोलियों, पक्षियों की चहचहाहट तथा वायु की सनसनाहट आदि भी सम्मिलित की जाती है। इसके द्वारा मानव तथा पशु-पक्षियों की विभिन्न बोलियों के अतिरिक्त किसी प्रदेश के प्राकृतिक वातावरण की मनोरम छटा का भी प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।[iv]

संगीत के मर्मज्ञ कृष्णचन्द्र शर्मा के मतानुसार 'संगीत प्रकृति के झरनों व पहाड़ों का उल्लास, नदियों के कल-कल बहते पानी का यौवन, पक्षियों की चहचहाहट और अपने वक्ष को काटकर मैदानों को उपजाऊ मिट्टी बाँटने वाली घाटियों का विरह तथा जीवन के रेगिस्तान में अपने सूनेपन को प्रेयसी या ईश्वर के दीदार से भरने की खोज में अमरत्व

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

की तलाश करते हुए मानव, बांसुरी, बीन, वीणा और सारंगी के सुरों का आलम है।[v]

श्री अरविन्द की दृष्टि में संगीत मूलतः एक आध्यात्मिक कला है और यह सदैव धार्मिक भावनाओं तथा आन्तरिक जीवन से जुड़ी रही है। इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है :

In fact, there is no other art except music which can particularise so well this mystic feeling of identitty of self with devine, the reason being the suppleness liveliness of the medium of music, the sound. Religious thinkers discovered the potentiality of sound, they made use of it to express their relation to God.[vi]

संत कबीर ने तो मानव शरीर को ही ईश वंदना में संगीत देने वाला वाद्य यंत्र माना है। उन्होंने अपने शरीर की समता तम्बूरे से इस प्रकार स्थापित की है :

हो साधो यह तन ठाठ तम्बूरे का।
पाँच तत्व का बना तम्बूरा तार लगा नौ तूरे का।
खेंचत तार मरोड़त खूँटी निकसत राग हजुरे का।
टूटा तार बिखर गई खूँटी हो गया धूर मधुरे का।
या देहि का गर्व न कीजे उड़ गया हंस तम्बूरे का।
कहे कबीर सुनो भाई साधो अगम पंथ इक सूरे का।।

वस्तुत संगीत ईश्वर-भक्ति तथा मोक्ष-प्राप्ति का सुगम साधन है।[अपप] इसमें भारतीय संस्कृति के तीनों शाश्वत मूल्य - 'सत्यं शिवं, सुन्दरम् अन्तर्निहित है। अतः उसे मानव की मुक्ति-गाथा का प्रथम प्रणव कहा जा सकता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

संगीत का महत्त्व :

भारत के प्राचीन शास्त्रों में ठीक ही कहा गया है- 'गानात् परतरं न हि' अर्थात संगीत से बढ़कर कुछ नहीं।[अपपप] भारतीय संगीतकला अपनी प्राणवत्ता और रसमयता के लिए विश्व में विख्यात है। इसकी शक्ति विलक्षण है। दीपक राग से बुझे हुए दीपकों में बिना प्रयत्न प्रकाश भर देना, मेघाराग से बरसात का दृश्य उपस्थित करना अपनी स्वर-लहरी से समस्त जड़्चेतन को वशीभूत कर लेना संगीत की ही शक्ति है। विक्षिप्त मस्तिष्क भी उससे सुख और शान्ति पाता है। अपनी इच्छानुसार देवी-देवताओं की निकटता का आभास संगीत की ही शक्ति का परिणाम है। प्राचीन युग में सामगीतों की स्वर लहरी ऐसा करने में समर्थ रही है।[ix]

कहा जाता है कि संसार का सर्जन भी संगीत से हुआ है और इसका संहार भी संगीत से ही होगा। सृष्टि का कोई ऐसा कोना नहीं, जहाँ इस का माधुर्य न बिखरा हो। वस्तुतः सृष्टि के कण-कण में संगीत के स्वर व्याप्त हैं। यहाँ तक कि पशु-पक्षी एवं जीव-जन्तु भी संगीत के प्रभाव से मन्त्रमुग्ध से हो जाते हैं। देव-दानव, यक्ष-गन्धर्व सभी तो संगीत का आनन्द लेते रहे हैं। शिव-शंकर का डमरू, नारद की वीणा, विद्या की अधिष्ठात्री मां सरस्वती की वीणा, गीता के गायक भगवान कृष्ण की बाँसुरी, इस तथ्य के परिचायक है।[x]

भर्तृहरि ने साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य को बिना पूँछ और सींगों का साक्षात् पशु माना है।[xi] सुप्रसिद्ध दार्शनिक डॉ॰ राधाकृष्णन के अनुसार संगीत किसी भी संस्कृति एवं सभ्यता की आत्मा है।[xii] सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में संगीत की कुछ दीक्षा लेना परम आवश्यक है। संगीत केवल जनमानस का रंजक ही नहीं अपितु मनुष्य

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

की सुख-दु:खात्मक भावोंर्मियों के प्रकटीकरण एवं प्रेषणीयता का सशक्त साधन है।[xiii]

डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने संगीत के महत्त्व को रेखांकित करते हुए लिखा है कि 'संगीत, नाटक और नृत्य तीनों मिली-जुली कलाएँ हैं। संगीत का आरम्भ आदिकाल से ही है। सामवेद संगीत का भण्डार है। जिस प्रकार इस कला की उन्नति हमारे पूर्वजों ने की है, वह आज भी एक अद्‌भुत चीज है। राग-रागनी का आविष्कार, समय के साथ उनका सम्बन्ध और हृदय पर प्रभाव डालने की शक्ति का अनुभव वह भी कर सकता है, जिसको संगीत-शास्त्र का कोई ज्ञान नहीं है। संगीत में भी सभी प्रकार के रस पाए जाते है और कलाकार का श्रेय इसी में है कि जिस भाव या रस का वह संचार करना चाहता है, सुनने वाले के हृदय में उसका संचार कर दे।"[xiv]

भारतीय संस्कृति में संगीत को आत्म-शुद्धि का सर्वोत्तम साधन माना गया है। संगीत-कला ने विभिन्न धर्मों की गायकी तथा साहित्य को आत्मसात्‌ किया है। इसीलिए भारतीय मनीषियों ने संगीत को आत्मा की आन्तरिक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति मानकर 'अध्यात्म विद्या' या मुक्ति-मार्ग की संज्ञा दी है।[xv]

वस्तुत: संगीत-कला तथा आत्मा एक-दूसरे में प्रतिबिम्बित होते हैं। संगीतकला का मुख्य लक्ष्य जनरंजन ही नहीं, भव-रंजन करना भी है, जो सांसारिक क्रिया-कलापों से निर्लिप्त परमात्मा से तादात्म्य कराता है। संगीतकला मोक्षदायिनी पवित्र गंगा की शीतल धारा के समान है जो मनुष्य के तन और मन को निर्मल कर देती है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

संगीत का उद्भव :

निस्सन्देह संगीत का जन्म सृष्टि के साथ ही हुआ होगा। रिमझिम-रिमझिम बरसती बरखा, झर-झर गाते झरने, कल-कल निनादिनी सरिताएँ, पंचम स्वर में मधुर आलाप भरती कोयल, नृत्य में मग्न पीहू-पीहू करते मोर, वेदपाठी वटुकों की भाँति संवेत् स्वर में गूंजती दादुर-धुनि, गुनगुनाते भंवरे, चटकती कलियाँ, सनसनाती वायु आदि सभी प्राकृतिक उपादान ही तो संगीत के मूल स्रोत हैं। परन्तु संगीत की उत्पत्ति को निश्चयपूर्वक चिह्नित कर पाना असम्भव है।

किसी भी कला के उत्स की जानकारी हमें वेदों से ही मिलती है, क्योंकि लिखित रूप में हमारे ज्ञान के प्रामाणिक स्रोत वेद ही हैं। पर इसका अर्थ यह कदाचित् नहीं कि वेदों से पूर्व वह कला थी ही नहीं। वैदिक काल से पूर्व आदिम जातियों में गीत, संगीत एवं नृत्य का प्रचुर प्रचलन था। प्रेम, श्रम, युद्ध, अन्तेष्टि, ईश्वर-भक्ति एवं जीवन के नाना क्रिया-कलापों तथा लोकोत्सवों से सम्बद्ध विविध गीतों में तत्कालीन संस्कृति का ताना-बाना बुना हुआ था।[xvi] कालान्तर में इसी सुदृढ़ पृष्ठभूमि पर वैदिक संस्कृति का उदय हुआ तथा लोकप्रचलित गीत-संगीत का परिष्कार करके वैदिक ऋषियों ने उन्हें वेद-मन्त्रों के रूप में सहेज लिया।

चारों वेद छन्दोबद्ध श्लोकों में लिखे गए हैं। इन श्लोकों को संगीतात्मक स्वर-लहरियों में गाया जाता था। वैदिक ऋषि, विद्वान तथा संन्यासी गा-गाकर उनका उच्च्चारण किया करते थे क्योंकि उनकी रचना संगीत के आधार पर हुई थी।[xvii]

इतिहास साक्षी है कि वैदिक संस्कृति में संगीत का महत्त्वपूर्ण स्थान था। ऋग्वेद में गीत, वाद्य एवं नृत्य का पदे-पदे उल्लेख मिलता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

है। ऋग्वेद के शांखायन ब्राह्मण के अनुसार इन तीनों शिल्पों (कलाओं) का प्रयोग प्रायः संयुक्त रूप में होता था :

"त्रिवृद्धै शिल्पं नृत्यं गीतं वादितमिति ।" (29-5)

ऋग्वेद में दुन्दुभि (जयतामिव दुन्दुभिः 1-28-4), वाण (वाणस्य चोदयापविम् 9-51-1) वीणा, तूणव आदि वाद्यों का उल्लेख है तो सामवेद में वेणु (10-135-7) वीणा (2-34-13) और कर्करि (2-43-3) आदि वाद्यों के प्रयोग की चर्चा है।[xviii]

अथर्ववेद में संगीत-परम्परा के प्रचलन का उल्लेख इस प्रकार हुआ है-

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्या ब्यैलवाः।
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दों यस्यां वदति दुन्दुभिः ।।

(अथर्ववेद, काण्ड-12, सूक्त 1, मन्त्र 41)

इस मन्त्र में गीत, वाद्य तथा नृत्य की सामूहिक ध्वनि का उल्लेख मिलता है।

ब्लूमफील्ड के अनुसार सामगान का अधिष्ठान लौकिक संगीत-ध्वनियों में है। सामगान के पाश्चात्य अन्वेषक फेल्बर के अनुसार सामवेद में लोकगीतों के प्रभावशाली तत्त्व विद्यमान है तथा यज्ञविधियों की प्रभावात्मकता की वृद्धि के लिए युद्ध-गीत जैसे लोकगीतों का गान सामगान के साथ प्रचलित था।[xix]

ऋग्वेद में अनेकत्र 'साम' के गायन का उल्लेख है। एक मन्त्र के अनुसार साम के गायन से समस्त नभमण्डल प्रतिध्वनित हो उठता था :

"गायत साम नभन्यं यथा वै ।" (ऋग्वेद 1/173/1)

सामवेद तो है ही संगीत का वेद। बृहदारण्यकोपनिषद् में 'सा च अमश्चेति तत्साम: सामत्वम्' (1-3-22) वाक्य से 'सा' का अर्थ ऋक्

International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

और 'अम' का अर्थ गान बताकर साम का व्युत्पादन किया गया है।[गग] संगीत की दृष्टि से सामवेद सर्वोत्कृष्ट है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने 'वेदानां सामवेदोऽस्मि' कहकर स्वयं को सामवेद बताया है। वस्तुत: सामवेद वह उत्तुंग शिखर है, जिससे निकलकर संगीत की पयस्विनि भारतभूमि को अद्यावधि प्लावित करती रही है।[xxi]

वेदों के उपरान्त रामायणकाल में सम्पूर्ण समाज संगीत की दिव्य आभा से आलोकित हो रहा था। नर-नारियों का जीवन संगीत के देदीप्यमान सूर्य की ज्योतिर्मय रश्मियों से प्रकाशमान हो रहा था। संगीतोत्सवों का सार्वजनिक आयोजन किया जाता था। धनी-निर्धन सभी संगीत के स्वरों में ईश्वरोपासना करते थे। धार्मिक कृत्यों में संगीत का प्रयोग अनिवार्य समझा जाता था। सप्तर्षियों के आश्रमों में राम को दिव्यगंध के अनुभव के साथ-साथ तूर्य-घोष तथा मंगल-गीतों की ध्वनि भी सुनाई पड़ी। ऋषि भारद्वाज के आश्रम में भरत के स्वागतार्थ चारों ओर देवताओं की दुन्दुभि का मधुर स्वर सुनाई दिया। देव-गंधर्व गाने लगे और सब ओर वीणा की स्वर लहरी गूंजने लगी। तत्कालीन ऋषि-मुनि संगीत की दैवी शक्ति से भली-भाँति परिचित थे और वे अपनी रचनाओं द्वारा शिष्यों को उसकी शिक्षा दिया करते थे।[xxii]

महाभारत में संगीत प्रचलन के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं। अर्जुन के जन्मोत्सव पर अप्सराओं के नृत्य-गान तथा गन्धर्वों के गायन-वादन का विस्तृत वर्णन है। नारद की तपस्या से प्रसन्न होकर शंकर भगवान ने उन्हें यह वरदान दिया था कि गायन-वादन में उनके समान तेजस्वी, तपस्वी एवं कीर्तिमान और कोई नहीं होगा।[xxiii] कुशल नर्तक एवं संगीतज्ञ श्रीकृष्ण की बांसुरी का चमत्कार इसी युग की महान उपलब्धि है। उस

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

समय के सर्वश्रेष्ठ वीणावादक अर्जुन ने बृहन्नला नाम से विराट-भूप की सुपुत्री उत्तरा को संगीत की शिक्षा दी थी।

महाभारत में लिखा है कि इन्द्र ने अर्जुन को संगीत सीखने के लिए उत्प्रेरित किया था :

वदितं देवविहितं नृलोके यन्न विद्यते।
तदर्ज्जयस्व कौन्तेय श्रेयो वै ते भविष्यति ।।

अर्थात् हे अर्जुन, तुम देवों से सम्पादित वाद्य बजाना सीखो। यह मृत्युलोक में प्राप्त नहीं होगा। इससे तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा।

इसके उपरान्त तो संगीत कला उत्तरोत्तर विकसित होती रही और मध्यकाल में भक्त-कवियों का कंठाभरण बनकर जनमानस में बस गई।

शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत :

शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत की दोनों धाराएँ वैदिककाल से निरन्तर समानान्तर चली आ रही है। देवीलाल सामर के अनुसार शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत एक वृक्ष की दो शाखाएँ हैं, न कि दुमंजिले मकान की पहली और दूसरी मंजिल। संगीत की ये दोनों विकास-दिशाएँ स्वतन्त्र हैं तथा दोनों ही प्रौढ संगीत शैलियों के दो विकसित स्वरूप हैं। शास्त्रीय संगीत के प्रेरणास्रोत व्यक्ति और शास्त्र हैं, तथा शास्त्र के नियमों में बंधा हुआ शास्त्रीय संगीत स्वतंत्रतापूर्वक विचरने का अधिकारी नहीं है। लोकसंगीत का प्रेरणास्रोत जनमानस है। उसका विकास और संचरण-क्षेत्र अधिक विस्तृत है।[xxiv]

शास्त्रीय संगीत के मूल रागों की जननी लोकसंगीत ही है, तथा उसी के आधार पर शास्त्रीय संगीत की राग-रागिनियों का महान् भवन अवस्थित है। जिस तरह शास्त्रीय संगीत का प्रेरक लोकसंगीत है, उस तरह लोकसंगीत का प्रेरक शास्त्रीय संगीत नहीं है। शास्त्रीय संगीत यदि

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

लोकसंगीत की ओर आमुख होता है तो उसकी लोकप्रियता बढ़ती है, उसका भावपक्ष सजीव और रसमय बनता है; परन्तु यदि लोकसंगीत शास्त्रीय संगीत की ओर झुकता है तो शास्त्र के बोझ से वह अपने गुणों को खो बैठता है।[xxv]

शास्त्रीय संगीत केवल इने-गिने लोगों के लिए है, जबकि लोकसंगीत बहुसंख्यक जनमानस की बपौती है। लोकसंगीत कंठकंठानुगत मौखिक परम्परा है। यह पढ़ने की अपेक्षा सुनने से सीखा जाता है।[xxvi] लोकोत्सवों में बिखरी लोकसंगीत की भाव-भीनी स्वर लहरियाँ समस्त परिवेश को रस-सिक्त कर देती हैं, जबकि शास्त्रीय संगीत धनाढ्यों के धन की तरह पहरेदारों की निगरानी में उसांसे भरता रहता है।

हरियाणा का लोकसंगीत :

हरियाणा की संगीत परम्परा बहुत प्राचीन तथा बड़ी समृद्ध है। इसे रेखांकित करते हुए हरियाणा के प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री कृष्णचन्द्र शर्मा ने लिखा है कि हमारे लोकगीत और लोकधुने ऋग्वेद से लेकर बीसवीं शताब्दी तक के इस महिमामण्डित भूमि के समस्त इतिहास का दर्पण हैं-गीता के अमर सन्देश, परिवारवाद को छोड़ स्त्री-सम्मान के लिए लड़ा गया महाभारत का युद्ध, धर्मनिरपेक्ष जीवन-दर्शन का सन्देश, स्थानेश्वर मन्दिर में नृत्यलीन हजारों कत्थक नृत्यांगनाओं के घुंघरुओं का संगीत, प्राची सरस्वती का स्वर्गतुल्य इतिहास, सन्त-सूफियों की अश्रुयुक्त और प्रेरक जीवन-गाथायें, यौधेयों का शौर्य, पानीपत की सारंगी, रोहतक का नगाड़ा, वीर कर्ण की दानवीरता, द्रौपदी का अनन्य सत्य और राधाकृष्ण का युगों तक गाया जाने वाला अविस्मरणीय आन्तरालिक प्रेम- सभी कुछ तो इस भूमि की वेदमयी, संगीतमयी कला और गाथामयी धरोहर का अंग है।[xxvii]

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

अध्ययन की सुविधा के लिए हरियाणा के लोक संगीत को इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है : (क) लोकगीतों में संगीत, (ख) लोकनाट्यों में संगीत, (ग) लोकनृत्यों में संगीत तथा (घ) लोकगाथाओं में संगीत ।

लोकगीत :

लोकगीतों का कोई ओर-छोर नहीं है। इनकी अजस्र धारा युग-युगों से प्रवहमान है। हमारे अतीत की कड़ियाँ, भविष्य की आशाएँ और आज की अनुभूतियाँ इस अमीय धारा की अक्षय थाती हैं। ये गीत स्वर-संयोजन, पद-लालित्य, शब्दाडम्बर एवं अर्थ-चमत्कार की पेचीदगियों से कोसों दूर हैं। ये अन्तरमन की गहन अनुभूतियों से स्पन्दित होते हैं, इसलिए श्रोताओं की हृदयतन्त्रियों को अनायास ही झंकृत कर देते हैं।

इस तथ्य को उजागर करते हुए पं० रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है कि "ग्राम-गीत प्रकृति के उद्‌गार है। इन में अलंकार नहीं, केवल रस है। छन्द नहीं, केवल लय है। लालित्य नहीं, केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री-पुरुषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्राम-गीत हैं।"[xxviii]

डॉ० गौतम शर्मा व्यथित का मत है, "लोकगीत जनमानस के भावपुत्र हैं। ये युग की सांस्कृतिक धरोहर और भावलोक का आगामी युगों में प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें सहज जीवन की सच्ची, अनूठी तथा सहज छाया मिलती है। वास्तविकता इनकी आत्मा है। लोक की तीनों मूल पूरक अभिव्यक्तियाँ - गीत, संगीत तथा नृत्य- इनके सहज सौन्दर्य एवं सरसता को बढ़ाती है। इनमें यथार्थ की मिट्टी की गंध, सामान्य जन के पसीने की महक एवं जनमानस का स्पन्दन गतिमान रहता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

प्रणय की सिन्दूरी आभा, उनकी ऊष्मा तथा मिठास गुनगुनी धूप में महकती है।"[xxix]

लोकगीतों की अस्मिता को उजागर करते हुए करतार सिंह 'शमशेर' ने अपने लेख 'ढोलियाँ दा देश' में लिखा है, "गीत, मनुख दे अन्दरले दी तसवीर है, जो बंसरी विच बोलदा है, सारंगी विच झरनाट छेड़दा है। तबले विच उमाह भरदा है। झांजर विच खड़कदा ते घुंगरूआँ विच टणकदा है अते हासिआं विच छलकदा है। अथरूआं विच तरदा है। इह मनुख दा महान जजबा गोरी दी अडी विच गभरू दी छाती विच धड़कदा है। उह लय विच बॅझे आपणे अंणतराशे बोल सुण के आप झूम उठदा है। गीत इक मस्ती है। गीत इक पिआर दी आवाज, गीत किसे दी पाजेब दी छणकार, किसे मिजराव दी टुणकार है। गीत भैणां भरावां, दिओरां ते भरजाईआं, हीरां ते रांझिआं दी मिलवीं अवाज है। गीत इक महान कोमल कला है।"[xxx]

लोकगीत किसी भी देश-प्रदेश के चिरसंचित लोकविश्वासों की अमूल्य निधि है और लोकादर्शों के अक्षय भण्डार हैं। इन लोकगीतों में ही जनमानस की मर्मान्तक एवं हृदयस्पर्शी भावनाओं का उद्रेक होता है। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहाँ इनका रंग न छिटका हो, भावलोक की कोई कन्दरा नहीं, जो इनसे अछूती हो, हृदय का ऐसा कोई उद्‌गार नहीं, जो इनमें अनुस्यूत न हो। वस्तुत समग्र लोकजीवन अपनी तिक्त एवं मृदुल अनुभूतियों के साथ इन लोकगीतों में व्यजित हुआ है। यदि यह कहा जाए कि मानव-मन की एक बस्ती इन गीतों में बसी है, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि मनुष्य के सुख-दु:ख, अश्रु-हास, उसके प्यार-मुहब्बत की रंगीन बातों तथा टीसभरी व्यथा-कथाओं से इन गीतों का ताना-बाना बुना जाता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

लोकजीवन के चप्पे-चप्पे में, लमहे-लमहे में, पोर-पोर में लोकगीत रचे-बसे हैं। करुण रस के गीतों की टोन बड़ी मार्मिक होती है। इन गीतों को जीवन्तता प्रदान करने का सर्वाधिक श्रेय नारी-जगत को दिया जा सकता है। भारतीय स्त्री ही अधिकांश लोकगीतों की कवयित्री ऋषिका है। उस मंगल्यानी गंवारिन के सुरीले कंठ की अमृत-ध्वनि गीतों के रूप में मूर्त है। इस मंगलमयी गीतकारिणी की भाषा के अनेक रूप हैं, किन्तु उनमें छिपे हुए अर्थों का रूप एक है।[xxxi]

लोकगीतों का रचना-विधान बड़ा लचीला होता है। अतः इन गीतों को अपने परिवेश एवं परिस्थितियों के अनुकूल ढलने में कभी कोई संकोच नहीं हुआ। लोकजीवन के संघर्ष और लोकमानस की प्रवृत्तियों के अनुरूप ये गीत निरन्तर अपना पथ, पाथेय एवं परिधान बदलते रहे हैं। समय-समय पर आवश्यकतानुसार इनके कथ्य और कथन-शैलियों में नित्य नए-नए मोड़ आते रहे हैं, आ रहे हैं और आगे भी आते रहेंगे। विगत के प्रति मोह एवं आगत के प्रति आकर्षण होने के कारण, इन गीतों में पारम्परिक मूल्यों एवं नवीन उद्भावनाओं का अद्भुत सामंजस्य है। इन लोकगीतों में जहाँ एक और सदियों से चले आ रहे पुराने संस्कारों, आदर्शों एवं तीज-त्योहारों का वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी ओर अधुनातन वैज्ञानिक आविष्कारों से लेकर राजनीतिक आन्दोलनों तक का लेखा-जोखा भी देखा जा सकता है।

संस्कार गीत :

संरकारों से संस्कृति बनती है। अतः यहाँ सबसे पहले संस्कार गीतों पर ही विचार किया जा रहा है। वैसे तो हमारी संस्कृति में सोलह संस्कारों का उल्लेख है, परन्तु मुख्यतः जन्म-संस्कार, विवाह-संस्कार एवं मृत्यु-संस्कार का ही निर्वाह किया जाता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

पुत्र जन्म के गीत :

हरियाणा में पुत्री-जन्म पर कोई गीत नहीं गाया जाता, जबकि पुत्र-जन्म को हर्षोल्लास के साथ उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर बधाइयाँ बंटती है तथा विभिन्न प्रकार के गीत गाए जाते हैं। सब से पहले देवी-देवताओं की स्तुति के गीत गाए जाते हैं। एक स्तुतिपरक गीत के बोल प्रस्तुत है :

पाँच पतासे पानां का बिडला ले श्याम जी पे जाइयो जी
जिस डाली म्हारे श्याम जी बैठे, वा डाली झुक ज्याइयो जी
झुक बी जाइयो न्यो बी जाइयो वा डाली फल ल्याइयो जी
पाँच पतासे पानां का बिड़ला ले देवी पै जाइयो जी
जिस डाली म्हारी देवी बैठी वा डाली झुक ज्याइयो जी
झुक बी जाइयो न्यो बी जाइयो वा डाली फल ल्याइयो जी

इसी प्रकार विविध देवी-देवताओं के नाम ले-लेकर गीत की कड़ियों को आगे बढ़ाया जाता है। इसके बाद पारिवारिक सम्बन्धों में माधुर्य घोलने वाले गीतों की झड़ी सी लग जाती है। कोकिलकंठी रमणियों का संवेत्-स्वर फूट पड़ता है :

पायां मैं पैजणियां लाला छुन्नक-छुन्नक डोलैगा
दादा कहके बोलैगा दादी की गोदी खेलैगा
पायां मैं पैंजणियां लाला छुन्नक छुन्नक डोलैगा
ताऊ कह के बोलैगा, ताई की गोदी खेलैगा
पायां मैं पैजणियां लाला छुन्नक-छुन्नक डोलैगा।

विवाह-गीत :

विवाह-संस्कार सामाजिक जीवन का सिंहद्वार है। इससे केवल दो प्राणी ही एकप्राण-द्विगात की स्थिति में नहीं आते, अपितु दो परिवारों

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

में भी पारस्परिक सौहार्द का सूत्रपात होता है। यही नहीं, इस अवसर पर सभी सगे-सम्बन्धी, परिजन-पुरजन पुलकित हो उठते हैं। आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष सभी में हर्षोल्लास की लहर दौड़ जाती है। वर और वधू दोनों ही पक्षों के यहाँ चहल-पहल का वातावरण होता है।

विवाहोत्सव का श्रीगणेश तो सगाई से ही हो जाता है। हर नवयौवना की चिरसंचित साध होती है कि उसे उसके अनुरूप जोड़ी का वर मिले। उसकी इस कामना को एक लोकगीत में इस प्रकार गाया जाता है :

दादा देस जांदा परदेस जाइए, म्हारी जोड़ी का वर ढूँढिए।
लाडो देस जांदा परदेस जाँगा ढूँड्या सै फूल गुलाब का ।।

सगाई की शुभ वेला पर देवी-देवताओं के स्तवन के साथ अनेक मंगलगीतों की गूँज सुनाई पड़ती है। इस अवसर के गीतों में सुख-समृद्धि की आकांक्षा से परिपूर्ण यह गीत स्त्रियों द्वारा बहुत ही मधुर स्वरों में गाया जाता है-

हरी-हरी गांडल सदा ए सरंगी, लटक मंडेरे आई बे
किसके ल्योगे साल-दुसाले कोणै छैल सिपाही बे
रमलु के ल्यांगे साल-दुसाले, बदलु छैल सिपाही बे

इसी प्रकार कुटुम्ब के अनेक नवयुवकों का नाम ले-लेकर इस गीत को बढ़ा लिया जाता है।

विवाह की तिथि निश्चित हो जाने पर लड़का या लड़की के मामा को उनके माता-पिता व्यक्तिगत रूप में स्वयं निमंत्रित करने जाते हैं। हरियाणा में इस प्रथा को भात न्योतना कहा जाता है। भात के गीतों में बहन-भाई के प्यार का झरना फूट पड़ता है। बहन अपने भाई को मिश्री के कूज्जे और मथुरा के पेड़ों से न्योतती है, क्योंकि उसे

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

विश्वास है कि उसका हजारी बीरा मोहर-अशरफियों से अपनी बहन के सम्मान को बढ़ाएगा और उसे सारे समाज में उजली कर देगा।

अब हंसते-गाते विवाह का शुभ दिन भी आ पहुँचता है। लड़के के विवाह में बारात जानी होती है। इसलिए उसके घर एक दिन पहले ही ठाठ-बाट लग जाते हैं। भाती आते है, उत्कंठा से प्रतीक्षा करती हुई बहन उनके शुभागमन पर उनका आरता उतारती है और उनके स्वागत में भात के गीत गाए जाते हैं। संवेत् स्वर फूट पड़ता है-

आज सीमां मैं रे बीरा उजली
आया मेरी मां का जाया बीर,
हीरेबन्द ल्याया चून्दड़ी।
ओढूँ तो हीरे मोती झड़ पड़ै
डिब्बे धरूँ तो ललचै जिया
हीरेबन्द ल्याया चून्दड़ी।

इसके बाद घुड़चढ़ी के अवसर पर अनेक रसभीने गीत गाए जाते हैं। बारात वधू-पक्ष के यहाँ पहुँच जाती है। लड़की के मन में अपने भावी पति को देखने की उत्कंठा होती है। इसलिए वह अपने दादा से उसके दर्शन करने की विधि पूछती है। द्वाराचार या ढुकाव अथवा तोरण चटकाने के अवसर पर इस भावना से अनुप्राणित गीत के बोल गूंजते है:

लाडो पूछे बाबा से, ओ बाबा !
मैं किस बिध देखण जाऊँ
रंगीला आ उत्तर्‌या बागां मै
हाथ डालड़िया फूलां की, हे लाडो !
मालणिया बण कर जाओ

रंगीला आ उतर्या बागां मैं
बोल गया बतलाए गया बागां मैं
म्हारी नूरचढ़ी बनड़ी कै नजर लगाए गया बागां मैं

इसके बाद जब बारात जीमने लगती है, तो कोकिलकंठी कामिनियाँ सरस गाली-गीत या सीठणें गा-गाकर समस्त परिवेश को रोमांचित कर देती हैं। जिन्हें सम्बोधित करके ये गाली-गीत गाए जाते हैं, उन में से कुछ तो इन्हें इतनी तन्मयता से सुनते हैं कि भोजन करना भी भूल जाते हैं, हाथ का कौर हाथ में ही रह जाता है, मानो उन्हें मन्त्र से कील दिया गया हो। बानगी के रूप में एक गाली-गीत के कुछ बोल इस प्रकार हैं-

आंगण बीच जी पीपली बरातियों जी
पीपली पे बैठ्या जी मोर, मोर बिचारा के करै
थारी माय ने लेग्ये चोर, भड़वे झयान के जी राज।

कभी-कभी व्यक्तिगत रूप में नामोल्लेख के साथ ये गीत गूंजते है; जैसे-

चकले मैं राच्छ घलाद्यो री चकले मैं
बारू नै पीस्सण ला द्यो री चकले मैं।
पीस्सैगा मोटा मारूँगी सोटा
चलते का पाडूँ लंगोटा री चकले मैं...

इसके बाद फेरे पड़ते हैं, तदुपरान्त बिदाई बेला आ पहुँचती है। बिदाई के गीत इतने मार्मिक होते हैं कि जिन्हें सुनकर सब की आँखें डबडबा आती हैं। वस्तुतः इन में करुण-रस साकार हो उठता है; जैसे-

ले रे बाबुल आपना मैं चली हूँ सजन के देस रे
भाइयाँ नै दिए महल दुमहले, हमनै दिया परदेस रे

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

काहे को ब्याही विदेस रे लक्खी बाबुल मेरे
हम हैं रे बाबुल मुण्डेरे की चिड़ियाँ
कंकरी मारे उड़ जाएँ रे लक्खी बाबुल मेरे
हम हैं रे बाबुल चौणे की गैय्यां
हांको जिधर हंक जाएँ रे लक्खी बाबुल मेरे

मृत्यु-संस्कार :

मृत्यु को हमारे यहाँ अशुभ माना जाता है। अतः इस अवसर पर मृतक के सगे-सम्बन्धी शोक-ग्रस्त होते हैं। असामयिक मौत पर विलाप के हृदय-विदारक स्वर श्रोताओं को करुणा-विगलित कर देते हैं। हां, वयोवृद्ध सुख-सम्पन्न व्यक्ति की मृत्यु को जश्न की तरह मनाया जाता है तथा इस अवसर पर सुखद गीत भी गाए जाते हैं।

फागुन के गीत :

लोकजीवन की अनुरक्ति प्रायः प्रेम एवं श्रृंगारिक भावनाओं में ही अधिक होती है। अतः मदमाते यौवन का ललाम चित्रण यहाँ के लोकसाहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति कही जा सकती है। यही कारण है कि यहाँ के लोकगीतों में विरह एवं मिलन के प्रसंगों का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। श्रृंगार का विलास बसन्त की मस्त बहारों में मुखरित हो उठता है। प्रकृति की पुलक के साथ ही नर-नारियों के हृदय में भी कामांकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं। नवयौवनाओं की तो बात ही क्या फागुन का जादू वृद्धाओं तक को रसीली चटको-मटको बना देता है। उनके पाँव नवोढ़ा छमकछल्लो की तरह थिरकने लगते हैं, देह-यष्टि लरजने लगती है तथा हृदय के उद्‌गार इन स्वरों में फूट पड़ते हैं-

छोरे मारूँगी, मरोड़ा देही तोड़ गडूँगी रे।
ज्यब आज्यागा तेरा ताऊ हाँडी रोड गडूँगी रे।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

x x x x
इसी गजब की बहू बणूँगी ज्यब सोल्हा सिंगार करूँ।
गाबरूआं मैं रुक्का पड़्ज्या बुढ्यां तक भी मार करूँ।

फागुन के मस्त महीने में संयोग एवं वियोग दोनों ही प्रकार के गीतों की गूंज सुनाई पड़ती है। आनन्द की उमंगों से आप्लावित सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए इससे बढ़कर राग-रंग का सुनहरी अवसर और नहीं होता। हर्षोल्लास से उनका अंग-अंग नाचने लगता है तथा उनके हृदय की मार्मिक अनुभूतियों गीत के मधुर बोलों में इस प्रकार अभिव्यजित होने लगती हैं-

फागण के दिन चार री सजनी फागण के दिन चार।
मध जोबन आया फागण मैं, फागण भी आया जोबन मैं।
झाल उठैं से मेरे मन मैं, जिनका वार न पार री सजनी।
फागन के दिन चार री सजनी, फागण के दिन चार।।
प्यार का चन्दन महकण लाग्या, गात का जोबन लहकण लाग्या।
मस्ताना मन बहकण लाग्या प्यार करण नै त्यार री सजनी।
फागण के दिन चार री सजनी, फागण के दिन चार।।
गाओ गीत मस्ती मैं भरकै, जी ज्याओ सारी मर-मर कै।
नाचण लागो छम-छम करकै, उठण द्यो झंकार री सजनी।

जिन सधवाओं के प्रियतम घार होते हैं, उन पर तो फागुन के उन्माद का रंग देखते ही बनता है, किन्तु जिनके हमजोली परदेस गए हुए है, वे वियोग-व्यथित प्रोषितपतिकाएँ मन ही मन बिसूरती रहती हैं। प्रियतम का विछोह उन्हें बिच्छू की तरह डंक मारता है। पिया बिना सूनी सेज सूली-सी लगती है। चान्दनी से नहाई दुधिया रातों में चंचल रमणियों के मनोरंजनात्मक पदाधात उन्हें जानलेवा से प्रतीत होते हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

उनके विरह-विदग्ध अन्तर्मन की टीस गीत के बोलों में इस प्रकार मूर्त हो उठती है-

ज्यब साजन ही परदेस गए, मस्ताना फागण क्यूँ आया।
ज्यब सारा फागण बीत गया, तै घर मैं साजन क्यूँ आया ।।
छम-छम नाचैं सब नर-नारी, मैं बैठी दुखां की मारी।
मेरे मन मैं ज्यब अन्धेर मच्या, तै चाँद का च्यान्दण क्यूँ आया।
ज्यब साजन ही परदेस गए, मस्ताना फागण क्यूँ आया।।
इब पी आया जी खिल्या ना, ज्यब जी आया पी मिल्या ना।
साजन बिन जोबन क्यूँ आया, जोबन बिन साजन क्यूँ आया।
मन की तै अरथी बन्धी पड़ी, आँख्याँ में लागी हाय झड़ी।
ज्यब फूल मेरे मन का सूक्या, जलमारया फागण क्यूँ आया।
ज्यब साजन ही परदेस गए, मस्ताना फागण क्यूँ आया।।

सावन के गीत :

इस मास में प्रकृति की छटा का अपना ही रंग होता है। रिमझिम रिमझिम पड़ती सावन की फुहारों में धरती हरी हो जाती है तथा इस पर छिटकी लाल-लाल तीजें ऐसी मोहक लगती हैं जैसे हरे मखमल पर बिखरी मणियाँ। दादुर-धुनि, मोरों की प्यकू-प्यकू, कोयल की कूक और चंचल चपला से आलिंगित कजरारे बादलों की गर्जना से लोकमानस रोमांचित हो उठता है तथा विरह-मिलन के मिश्रित उद्गार सावन के इन्द्रधनुषी गीतों में फूट पड़ते हैं।

निदाघ से संतप्त हरियाणा के नर-नारी मुंह बाए सावन की मन्द-मन्द बयार एवं ठण्डी-ठण्डी फुहारों की प्रतीक्षा करते हैं तो सासरे (ससुराल) में महिलाएँ अपने घर से आने वाली कोथली की उत्सुकता

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

से बाट जोहती है। प्रतीक्षा के पलों में वाणी फूट पड़ती है तथा नाई को दोषी ठहरा कर भला-बुरा कहा जाता है-

नीम्बा के निम्बोली लागी, सामणिया कद्य आवैगा
मरियो री ओह् दीप्पा नाई, कोथली कद्य ल्यावैगा।।

नाई को फुर्सत नहीं, तो क्या? भाई को तो बहन का ध्यान है। मां की अनुपस्थिति में तो उसका दायित्व और भी बढ़ गया है। इसीलिए वह अपनी मौसी से बहन के लिए कोथली तैयार करने का अनुरोध करता है-

मीट्ठी तो करदे री मोस्सी कोथली, सामण आया री गूंजता
जांगा री बेब्बे कै देस, मींहा नै री झड़ ला दिया।

बरसात की परवाह न करते हुए, उल्लसित मन से नद-नदियों को पार कर उछलता-कूदता भाई जब प्रतीक्षारत बहन के यहाँ पहुँचता है तो उसे अनमनी देख कर दु:ख का कारण पूछता है। बहन कारण बताती है और भाई तुरन्त उसका समाधान निकाल कर उसे आश्वस्त करता है-

- किसीयां के दुख म्हें बेब्बे दूबली
  किसीयां नै बोल्लै सैं बोल, सामण आया ए गूंजता
- सासड़ के दु:ख म्है रे बीरा दूबली
  नणदी नै बोल्लै सैं बोल, सामण आया रे गूंजता
- नणदी नै भेजांगे बेब्बे सासरे
  सास्सु नै चक लेगा राम, सामण आया ए गूंजता।

सावन आया तो नवेली तीज भी लाया। सर सरिताओं के लहलाते कूलों पर, बाग-बगीचों में झूल-पंजाली पड़ गए। रंग-बिरंगी

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

पींघा-पाटड़ियों पर सावन की महिमा मुखरित हो उठी। झूलते-झुलाते रंगीले सजीले कली कुसुमों पर छबीले-रसीले भ्रमर मंडराने लगे।

झूलों पर इठलाती गाती तितली-धर्मी रमणियों के रूनुक-झुनुक करते आभूषण एवं खनखनाती चूडियों का मधुर संगीत अनायास ही युवकों के मन को बेंध लेता है। वे अपने मर्माहत हृदय की प्रतिक्रिया इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं-

तीजां का त्योहार रुत सै सामण की।
खड़ी झूल पै मटकै छोरी बामण की।।
क्यूं तो ऊँची पींघ चढ़ावै,
कदे पड़के नाय्ड़, तुड़ावै,
याह् लरज-लरज के जावै डाली जामण की।
तीजां का त्योहार रुत सै सामण की।।

देखिए एक नाटकीय दृश्य जिसमें नायक झूलने वाली कोमलांगी को सचेत ही नहीं करता अपितु उसे पींघा से गिरते ही धरती पर पड़ने से पूर्व ही किस प्रकार अपनी भुजाओं में भर कर आनन्द लेता है-

रै सुण झूलण आली तेरी लिकड़ रही रमझोल
पहलाझोट्टा आया फेर दूजा बी आया
ना तीजे म्है गया लखाया दिया उप्परे तै घूंघट खोल
गाफ्फी भर छोह्रे नै ठाल्यी कुल पन्दरा सिर का तोल
रै सुण झूलण आली तेरी लिकड़ रही रमझोल

इस मस्ती भरे मौसम में किसी रूपयौवना के हृदय में आनन्द की हिलोरें उठ रही हैं तो किसी प्रोषितपतिका का हिया बिन पिया विरहव्यथा से व्याकुल है। इसका प्रियतम वादाशिकन निकला, सावन में आने की कह कर भी नहीं आया। प्रतीक्षा करते-करते आधा सावन बीत गया।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

चारों ओर रंगीली तीज की धूम मच गई। पर उसे आज भी हताश ही होना पड़ा। बेचारी अपने मन को जिस किसी तरह समझाने का प्रयत्न करती है। अपने अंगों को मैले-कुचैले वस्त्रों में छिपाती है पर यौवन तो उसका इतना प्रबल शत्रु हो गया है कि छुपाए नहीं छुपता। मन मसोस कर रह जाने के अतिरिक्त वह और कर भी क्या सकती है-

सामण का महीना मेघा रिमझिम रिमझिम बरसै
मन नै समझाऊँ तो बी बैरी जोबन तरसै
तीजां के दिनां की तो थी आस बड़ी भारी
ऐसे म्है बी ना आए मैं पड़ी दुखां की मारी।

राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित गीत :

राष्ट्र की रक्षा एवं इसके बहुमुखी विकास से सम्बद्ध प्रत्येक कार्य में हरियाणा के लोगों ने शानदार भूमिका निभाकर अपनी अमिट छाप अंकित की है। इसके रण-बांकुरों की वीरता का सिक्का बहुत पुराना है। यहाँ तक कि मनुस्मृति में भी इनके पराक्रम को रेखांकित किया गया है।[xxxii]

लोकजीवन का प्रत्येक कार्यव्यापार इसके लोकगीतों में रूपायित होता है। अंतः लोकगीतों की स्वर लहरियों में गुंथ कर ही राष्ट्रीय भावना लोकमानस में तरंगायित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय आन्दोलनों के संचालन एवं सम्पन्नता की कहानी भी लोकगीतों में अनुस्यूत रहती है।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि सन् 1857 (सं० 1914) के विद्रोह में राव तुलाराम के नेतृत्व में हरियाणा के सिंह सपूतों ने शत्रु को छठी का दूध याद दिलवा दिया था। उनके शौर्य और साहस को द्विगुणित किया था इस लोकगीत ने-

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

सुणो फौज, 'अहीरवाल' आज मेरे भाई।
माता जन्मे एक बार दुबारा नाहीं
यो छत्री की नाक डटो रण मांही
तम सिर की सांग्य बणाल्यो छाती ढाल।
हिया करल्यो बज्जर का देह करो दिवाल।
आजझगड़ा मंडग्या दीन पै चौदा की साल।।

बहुत लम्बे संघर्ष के बाद हमें स्वतन्त्रता मिली। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी देश पर अनेक संकट आए। कभी चीन को चिनगारी लगी तो कभी पाकिस्तान ने चैन नहीं लेने दिया। हमारे वीर सेनानियों ने तो अपने कर्तव्य को निभाया ही, पर लोकजीवन में भी इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। नवयुवकों की तो बात ही क्या, नवप्रणीता युवतियों की वाणी भी फूट पड़ी-

बरछी तीर कटारी ल्यादे पैने मुंह की सेल।
ले चल साजन मनैं भी फौज मैं गेल।
चीनी दुश्मन खाड्या पहाड़ पै धन लूटै।
बीर-मरद हों साथ मोरचा ज्यब टूटै।
भर-भर गैलण गेरूंगी मैं मोटरां मैं तेल।
से चल साजन मनैं भी फौज मैं गेल ।।

भक्ति-संगीत :

भक्त और भगवान में सानिध्य स्थापित करने का सब से सशक्त साधन संगीत ही है। आध्यात्मिक उपासनाओं में प्रयुक्त कीर्तन, भजन आदि भक्ति के रूपों में सदा संगीत की प्रधानता रहती है। भगवान कृष्ण को तो तन्मय होकर नाचते-गाते भक्तों का हृदय स्थल ही अपने

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

निवास के लिए सर्वोत्तम जगह लगती है। पद्मपुराण में उन्होंने कहा है :

नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः ।।

भगवत्-प्रेम की प्राप्ति के लिए, मानसिक विकारों का शमन करके जो भजन गाए जाते है, उसे भक्ति संगीत कहा जाता है। संगीत का महान गुण है कि वह चित्तवृत्तियों को शान्त तथा एकाग्र करके श्रोताओं को तन्मय कर देता है। यही कारण है कि कीर्तन- मण्डलियों में ईश्वर-प्रेम की संगीतधारा प्रवाहित रहती है। हरियाणा का एक ऐसा ही भक्तिगीत प्रस्तुत है :

सत्संग मैं मैं कैसे जाऊँ, घर की दुबध मिटै कोन्या।
हे मेरे बिछड़े राम मिलैं कोन्या।
चूल्हे की आग्य, रामजी पाणी तै बुझा द्यूँ,
दिल की आग्य बूझै कोन्या, हे मेरे बिछड़े. . .
नाली का पानी रामजी बन्धे तैं डाट द्यूँ
दिल की झाल डटै कोन्या, हे मेरे बिछडे. . .
गायां के बाच्छडू रामजी जेवड़े तै बाँध द्यूँ
दिल का साँड बन्धै कोन्या, हे मेरे बिछड़े. .

हरियाणा के संगीत का फलक बहुत व्यापक है। यहाँ के लोकनाट्यो, लोकनृत्यों लोकगाथाओं एवं प्रकीर्ण गीतों में इसके अनेक रूप विद्यमान हैं, जिसके सम्यक् अनुशीलन के लिए एक स्वतन्त्र बृहद ग्रंथ की रचना अपेक्षित है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

सन्दर्भ-सूत्र :

i. डॉ० पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणवी साहित्य और सस्कृति (1990), पृ० 39-40

ii. सुरेशचन्द्र बन्धोपाध्याय (अनुवादक) संगीत रत्नाकर, पृ० 5

iii. डॉ० शरच्चन्द परांजपे, सगीत बोध, पृ० 175

iv. राम अवतार वीर, भारतीय संगीत का इतिहास (1996), पृ० 17

v. कृष्णचन्द्र शर्मा, कविसूर्य लखमीचन्द (2001), पृ० 63

vi. Gowri Kuppuswami & Hari Haran, Readings on Music and Dance, p. 25

vii. गीतं वाद्यं च नृत्यं च नाट्य विष्णुकथा मुने।
य: करोति स पुण्यात्मा त्रिलोक्योपरि संस्थित।। (स्कन्दपुराण)

viii. Of all the sixty four branches of Fine Arts the first one is music happens to be the best, foremost and one of the most ancient of all the sixty four branches of the fine arts. Nothing is higher than music – Anil Baran Ganguly, Sixty Four Arts in Ancient India (1962), p. 8

ix. डॉ० श्यामनारायण पाण्डेय, नाट्यालोचन (1966), पृ० 111

x. गीतेन प्रीयते देव: सर्वज्ञ पार्वती पति:।
गोपी पतिरनन्तोऽपि वंश ध्यनि वंशगत:।
सामगीतिरतो ब्रह्मा वीणासक्ता सरस्वती।
किमन्ये यक्षगंधर्व देवदानव मानवा:।
– शार्गंदेव, संगीत रत्नाकर (1942), पृ० 7

xi. साहित्य संगीत कला विहीन: ।
साक्षात् पशु पुच्छ-विषणहीन: ।। – भर्तृहरि नीतिशतक, श्लोक 12

xii. डॉ० सुनीता शर्मा, भारतीय संगीत का इतिहास (1996), पृ० 25

xiii. Music is the inalienable birthright of the soul. His thoughts, his emotions, his joy and sorrow, his hope and despair, his gratitude, all find expression, as they should in music peculiarly built to voice the same. Music was ever meant to express and not marely to please. – Cultural Heritage of India Vol. III, p. 567-68

xiv. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, संस्कृत और संस्कृति (1962), पृ० 79

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

xv. In ancient Indian culture put music on a special plane. Music was viewed as a creation of devine agency. It was the finest of the arts. It was given a status of 'Adhyatma Vidya' a pathway of self–realization. – Prof. V.K. Aggarwal, A Critical Study of Foreign Authers on Indian Music, p. 13

xvi. There was a great variety of songs among the primitive tribes. There were songs for dance and feasts, for funerals and wild processions, for war and chase. There were love songs, songs of labour, songs in praise of the nature and the supernatural, and the like and the themes of their songs were woven round the trifle and simple events of daily life. – Swami Prajnanand, Music Among Primitive Tribes

xvii. राम अवतार वीर, भारतीय संगीत का इतिहास (1996), पृ० 43

xviii. डॉ० नगेन्द्र (सम्पा०), भारतीय साहित्य संस्कृति एवं कला (1972), पृ० 408

xix. अंजू शर्मा, ब्रज संस्कृति में संगीत (1996), पृ० 18

xx. कल्याण, वेदकथांक (जनवरी–फरवरी 1999), पृ० 171

xxi. अंजू शर्मा, ब्रज संस्कृति में संगीत (1996), पृ० 30

xxii. डॉ० सुनीता शर्मा, भारतीय संगीत का इतिहास (1996), पृ० 53

xxiii. डॉ० धर्मावती श्रीवास्तव, प्राचीन भारत में संगीत (1967), पृ० 67

xxiv. देवीलाल सामर, लोकधर्मी प्रदर्शकारी कलाएँ (1968), पृ० 19

xxv. देवीलाल सामर, लोकधर्मी प्रदर्शकारी कलाएँ (1968), पृ० 21

xxvi. Typically folk music lives in oral tradition. It is learned through hearing rather than reading. – Encyclopaedia Britanica, p. 466

xxvii. कृष्णचन्द्र शर्मा, कविसूर्य लखमीचन्द (2001), पृ० 15–16

xxviii. रामनरेश त्रिपाठी, कविता कौमुदी, भाग–5 (संवत् 1986), पृ० 1

xxix. डॉ० गौतम शर्मा व्यथित, हिमाचल प्रदेश : लोकसंस्कृति और साहित्य (1950), पृ० 102

xxx. सन्तोख सिंह धीर, लोकगीतां बारे (1954), पृ० 95–96

xxxi. डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय, कुमाऊँ का लोकसाहित्य (भूमिका), पृ० 3

xxxii. कुरुक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च पांचालांशूरसेनजान्।
दीर्घाल्लिघूंश्चैव नरानग्रानीकेषु योजयेत्।। (मनुस्मृति, 7/193)